

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 10, 2 कुरिन्थियों 9, देने के बारे में अधिक जानकारी

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10, 2 कुरिन्थियों 9, देने के बारे में अधिक जानकारी है।

जैसा कि हमने 2 कुरिन्थियों अध्याय 8 पर अपनी बातचीत और चर्चाओं में देखा, धन के प्रबंधन के लिए चर्च की ज़रूरत आज भी उतनी ही संवेदनशील है जितनी उस समय थी जब पॉल ने कुरिन्थियों को लिखा था।

दूसरे शब्दों में, इसे अत्यंत संवेदनशीलता, शालीनता और गरिमा के साथ संभाला जाना चाहिए। वित्तीय जिम्मेदारी और लोगों को दान देने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए, यह एक कठिन कार्य है, तब भी जब परिस्थितियाँ सही और परिपूर्ण लगती हों। 2 कुरिन्थियों के अध्याय 8 और 9 में पौलुस की लंबी चर्चा दर्शाती है कि किसी भी मंत्रालय की सफलता के लिए योजना और प्रशासन कितना महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से दिए गए मंत्रालय की।

उदारता ऐसी चीज़ नहीं है जो मनुष्य में जन्मजात होती है, और इसलिए लोगों को यह सिखाया जाना चाहिए कि कैसे देना है और कैसे प्राप्त करना है। आप देखिए, ईसाई जीवन और सेवा के बारे में हमेशा तत्परता होती है, और यह जीवन और सेवा की प्रकृति और उनकी बड़ी ज़रूरत से उत्पन्न होती है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि 2 कुरिन्थियों अध्याय 9 में क्या चल रहा है। यह एक तथ्य है कि जीवन में, विभिन्न कारणों से उत्साह को लंबे समय तक बनाए रखना हमेशा मुश्किल होता है, और हमने कुरिन्थियों और देने के मामले में इसे देखा।

कुरिन्थियों के अध्याय 9 में बातचीत जारी है। अब, हमें यह कहना चाहिए, कम से कम हमें यह तो पता होना चाहिए कि कुछ विद्वानों ने अध्याय 9 को अध्याय 8 से पूरी तरह से अलग माना है, और उन्होंने तर्क दिया है कि नहीं, अध्याय 9 को बहुत अलग होना चाहिए। यहाँ पौलुस शुरू करता है, क्योंकि संतों के लिए इस सेवकाई के बारे में आपको लिखना मेरे लिए अनावश्यक है।

अब एनआरएसवी में इसे पढ़ा जाता है, अब मेरे लिए संतों की सेवकाई के बारे में आपको लिखना ज़रूरी नहीं है। हालाँकि कई विद्वान अध्याय 9 को मूल रूप से एक स्वतंत्र पत्र मानते हैं, लेकिन यह सुझाव देने के लिए तर्क है कि यह नहीं है, ऐसा नहीं है। दूसरे शब्दों में, ऐसे तर्क हैं जो सुझाव देते हैं कि अध्याय 9 विभिन्न संदर्भगत और व्याकरणिक लिंक द्वारा अध्याय 8 से निकटता से जुड़ा हुआ है।

मोरे हैरिस ने 2 कुरिन्थियों पर नए नियम की अपनी उत्कृष्ट न्यू इंटरनेशनल क्रिटिकल कमेंट्री में यह तर्क देकर एक बेहतरीन काम किया है कि, उदाहरण के लिए, वाक्यांश अब के बारे में, जो ग्रीक में पेरी-डी है, आमतौर पर एक नए विषय का परिचय देता है, लेकिन अध्याय 9 में ऐसा कोई सबूत नहीं है कि यह ऐसा करता है। मौजूदा ग्रीक साहित्य में इस बात का कोई सबूत नहीं है कि

यह यहाँ इस तरह से काम करता है, लेकिन इसके विपरीत, यह हमेशा जो पहले होता है उसके साथ एक करीबी रिश्ता भी व्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में, यह 9-1 में आगे देखता है, जब पॉल शब्द पुरुषों, दिन का उपयोग करता है, तो यह श्लोक 3 की ओर देखता है, लेकिन फिर 4, जो अब लड़की के बारे में आता है, 8-24 की ओर देखता है।

और, बेशक, यह सुझाव देने के लिए कई अन्य सम्मोहक कारण देता है कि वे अलग-अलग अध्याय नहीं हैं, बल्कि एक दूसरे से प्रवाहित हैं, और यही वह स्थिति है जिसे हम अपनाते हैं। दूसरे शब्दों में, वर्तमान संदर्भ में इन छंदों की साहित्यिक अखंडता हमें परेशान नहीं करनी चाहिए। हमें उन्हें उसी तरह पढ़ना चाहिए जिस तरह से हमने उन्हें कैनन में रखा है क्योंकि दोनों व्याकरणिक रूप से निकटता से जुड़े हुए हैं।

वे न केवल व्याकरणिक रूप से, बल्कि विचारों में भी जुड़े हुए हैं। वे विचारों में भी जुड़े हुए हैं। पौलुस फिर से कुरिन्थियों के प्रति अपना विश्वास व्यक्त करता है, लेकिन वह आशंकित होकर समझाता है कि प्रतिनिधिमंडल क्यों भेजा जा रहा है और वह उन्हें क्यों भेजना चाहता है।

इसलिए, वह चर्च से आग्रह करता है कि जब वह अगली बार कुरिन्थ की यात्रा पर आए तो चंदा इकट्ठा करने के लिए तैयार रहकर प्रतिनिधिमंडल के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दें। पौलुस खुद के लिए अपमान से बचना चाहता है, इसलिए पद 1 में, आइए हम इस पर गौर करना शुरू करें। वह कहता है कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

वह स्वीकार करता है कि अब उसे लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है, या जैसा कि NASB कहता है, यह अनावश्यक है, या NRSV कहता है, यह ज़रूरी नहीं है। दूसरे शब्दों में, मैंने वह लिख दिया है जो मुझे आपको लिखना था। मेरे पास लिखने के लिए ज़्यादा कारण नहीं है, लेकिन बात यह है।

उन्होंने कहा कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं है, और फिर भी उन्होंने ऐसा करना जारी रखा। मैंने आपको मंत्रालय के बारे में बताया, और फिर वे आगे बढ़ते हैं। जैसा कि हमने कुछ समय पहले कहा था, वे अब उन्हें लिखते हैं।

आप जानते हैं, मुझे यकीन है कि आपके प्रोफेसरों या सेमिनरी में शिक्षकों ने आपको बताया होगा, ठीक है, मुझे आपको यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है कि आपकी मध्यावधि परीक्षा या आपकी अंतिम परीक्षा व्यापक होने वाली है, लेकिन उन्होंने अभी यही किया है। मेरा मतलब है, मुझे आपको यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है कि आपको घर से बाहर निकलने से पहले दरवाज़ा बंद करने की ज़रूरत है, लेकिन आपने अभी यही किया है। आपने मुझे याद दिलाया है कि मुझे घर से बाहर निकलते समय दरवाज़ा बंद करके उसे लॉक करना होगा।

तो फिर इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि जब पॉल कहता है, अब मेरे लिए संतों की सेवकाई के बारे में तुम्हें लिखना ज़रूरी नहीं है, तो हमें ऐसा क्यों कहना चाहिए? खैर, इस वजह से, यह अध्याय 8 से जुड़ा नहीं है। यही उसने अभी किया। वह बस उन्हें फिर से याद दिलाता है। आप देखिए, यह एक अलंकारिक उपकरण है जिसका उपयोग पॉल करता है।

यह एक अलंकारिक उपकरण है जिसे हम पक्षाघात कहते हैं जब आप किसी चीज़ को अनदेखा करते हैं। लेखक और वक्ता हमेशा यही करते हैं जब वे किसी विषय को अनदेखा करते हैं, केवल भविष्य में इसका फिर से उल्लेख करने के लिए। शायद पॉल को लगता है कि उसके पाठक विषय से ऊब रहे हैं या उसमें रुचि नहीं ले रहे हैं या यह फिर से शुरू हो गया है; यह दर्शाता है कि इसमें उनकी उदारता में विश्वास की कमी है, लेकिन फिर यहाँ उसका दोहराव कुरिन्थियों को याद दिलाता है कि उन्हें कुछ करने की ज़रूरत है।

यह ऐसा है जैसे पॉल कुरिन्थियों से कह रहा है, इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू करो। तुम्हें यह करना ही होगा। हालाँकि वह उन पर अनावश्यक दबाव न डालने के लिए सावधान है, लेकिन क्या यह उसका खुद का दबाव नहीं है, उन्हें याद दिलाना? क्या यह एक सूक्ष्म दबाव नहीं है? वह उन पर दबाव नहीं डालना चाहता, और फिर भी वह उन्हें फिर से बताता है।

मुझे याद है कि कई साल पहले जब मैं एक युवा धर्मातरित व्यक्ति था, मैं पादरी के पास जाता था और कहता था, क्षमा करें, पादरी, क्या मैं यह कर सकता हूँ? आप मुझे क्या बेच सकते हैं? और पादरी कहते थे, ठीक है, अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं यही करता। अब, मैं समझता हूँ कि इसका मतलब यह है कि मुझे यही करना चाहिए, लेकिन पादरी मुझे स्पष्ट रूप से यह नहीं कहते कि मैं जाकर ऐसा करूँ। वह केवल यही कहते हैं: अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं यही करता।

अगर मैं आपकी जगह होता, तो मैं यही कहता। यह मुझे ऐसा करने के लिए कहने का एक अप्रत्यक्ष तरीका है, बिना इसके कि वह ऐसा करने के लिए कोई जिम्मेदारी ले। यह मुझे अपने निर्णय खुद लेने देता है, और फिर भी, मैं एक अनुयायी के रूप में समझता हूँ कि वह जो कह रहा है वह मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

पॉल यहाँ बिल्कुल यही कर रहा है। पॉल कह रहा है, ठीक है, मुझे नहीं लगता कि मुझे अब इस बारे में आपको लिखने की ज़रूरत है क्योंकि मैंने आपको इसके बारे में बहुत कुछ बताया है, लेकिन फिर दूसरे पद में, वह कहता है, क्योंकि मैं आपकी उत्सुकता को जानता हूँ। मैं आपकी उत्सुकता को जानता हूँ, जो कि मैसेडोनिया के लोगों के सामने आपके बारे में मेरी शेखी बघारने का विषय है, कि पिछले साल से ही देखभाल तैयार है, और आपके उत्साह ने उनमें से अधिकांश को उत्साहित किया है।

और फिर वह आगे कहता है, तीसरी आयत को देखिए, लेकिन मैंने भाइयों को भेजा है, ताकि इस मामले में तुम्हारे बारे में हमारी घमण्डी व्यर्थ न हो जाए, ताकि जैसा कि मैं कह रहा था, तुम तैयार रहो। अन्यथा, यदि कोई मैसेडोनियन मेरे साथ आता है और तुम्हें तैयार नहीं पाता है, तो हम, तुम्हारी तो बात ही छोड़ो, इस भरोसे से शर्मिदा होंगे। यह दबाव है, आप इसे जो भी नाम देना चाहें।

उन्होंने कहा, ठीक है, मैं आपको लिखना नहीं चाहता, लेकिन मैं आपकी उत्सुकता को जानता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि आप यह काम करें क्योंकि आप जानते हैं कि अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, और मैसेडोनियन और हम आते हैं, तो अपने बारे में, अपने बारे में बात भी नहीं करते, हम

शर्मिदा होंगे, लेकिन हम नहीं चाहते कि आप शर्मिदा हों। वाह, वाह, पॉल, यह वास्तव में एक महान पादरी है। वह जानता है कि चीजों को कैसे संभालना है।

और पौलुस ने तत्परता भी जताई। उसने पहले भी कुरिन्थियों के उत्साह का बखान किया था, और वास्तव में, उसने इसका इस्तेमाल मैसेडोनियावासियों को प्रेरित करने के लिए किया था। और मैसेडोनियावासियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, लेकिन कुरिन्थियों ने चंदा इकट्ठा करने का काम जारी नहीं रखा है।

तो, पॉल यहाँ रिवर्स का उपयोग कर रहा है, जिसे हम रिवर्स साइकोलॉजी कहेंगे। पॉल कह रहा है, सुनो कोरिंथियन, आप देखिए, मैंने मैसेडोनियावासियों को तुम्हारे बारे में बताया, और जब मैसेडोनियावासियों ने तुम्हारे बारे में सुना, तो वे उत्साहित हो गए। उन्होंने देना शुरू कर दिया, और उन्होंने परियोजना के लिए दान दिया।

अब, हम मैसेडोनियावासियों के साथ आपके पास आ रहे थे। आप नहीं चाहते कि मैसेडोनियावासी जिनके बारे में हमने आपके बारे में गर्व किया, जिनके बाद हमने आपके बारे में गर्व किया। आप नहीं चाहते कि वे बिना तैयारी के आपसे मिलें। यह आपके लिए अच्छा नहीं होगा।

इस प्रकार, हालाँकि पौलुस अभी भी कुरिन्थियों के उत्साह की पुष्टि कर रहा है, वह नहीं चाहता कि वे अपनी अपूर्णता के कारण शर्मिदा हों। पौलुस और कुरिन्थियों दोनों का सम्मान दांव पर लगा था। आप देखिए, यह एक तरह का सम्मान और शर्म है।

पॉल कहते हैं, अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह आपके सम्मान के लिए होगा। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो यह आपके लिए शर्म की बात होगी। तो, आप वाकई ऐसा करना चाहेंगे।

इसलिए, वह पद 2 में कारण बताता है कि उसे उन्हें लिखने की आवश्यकता क्यों नहीं है। वह भाग लेने के लिए उत्साह और इच्छा से अवगत है; वह उनके बारे में शेखी बघार रहा है, और वह कहता है कि आपको तैयारी शुरू करने की आवश्यकता है। फिर, आप पद 3 में देखते हैं, जो बहुत महत्वपूर्ण है, पॉल ने उद्देश्य वाक्यों का उपयोग किया है। उनमें से चार हैं।

एक वाक्य में, वह एक नकारात्मक, एक सकारात्मक, एक और नकारात्मक, और फिर एक सकारात्मक देता है। यही वह करता है, और वह उस आयत को आयत 1 और 2 के साथ जोड़ता है। आयत 3 में इसे देखें। आयत 3: इसे देखें, वह क्या करता है, लेकिन मैंने भाइयों को इसलिए भेजा है कि हमारा तुम्हारे बारे में घमंड व्यर्थ न जाए, ताकि, जैसा कि मैं कह रहा था, तुम अन्यथा तैयार हो जाओ। तो, आप देखिए, उसने उन्हें कारण बताना शुरू कर दिया कि उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता क्यों है।

इसलिए, उसने नकारात्मक जवाब दिया। मैं नहीं चाहता कि तुम शर्मिदा हो। ताकि कुरिन्थियों के बारे में उसकी अपनी शेखी बघारना व्यर्थ न हो जाए,

वह नहीं चाहता कि उनकी शेखी खोखली साबित हो। वह नहीं चाहता कि कुरिन्थियों की उत्सुकता के उदाहरण का उपयोग करके मैसेडोनियावासियों को प्रेरित किया जाए कि वे खोखली हैं। आप जानते हैं, अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया, और मैसेडोनियावासी आए, और उन्हें पता चला कि कुरिन्थियों ने ऐसा नहीं किया है, तो वे आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पौलुस ने उन्हें बरगलाया था क्योंकि वह मैसेडोनियावासियों के पास गया और उन्हें बताया कि कुरिन्थियों ने ऐसा ही किया था।

और अगर कुरिन्थियों ने आकर, अगर मैसेडोनिया के लोगों ने आकर पाया कि यह सच नहीं है, तो वे कहेंगे, ठीक है, तुमने हमें बरगलाया है। इसलिए, पौलुस का घमंड खोखला हो जाएगा, और उनके साथ पहले जो दुश्मनी थी, जो अभी-अभी सुलझी है, उसे देखते हुए, चीजें फिर से सामने आएंगी। और यह महत्वपूर्ण है।

पद 4 में, आपको इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण मिलता है। ताकि, कहीं ऐसा न हो कि वह किसी तरह से अपमानित हो जाए, वह उनकी गलती या उनके द्वारा आगे न बढ़ने के कारण अपमानित न हो। पद 4 को देखें। अन्यथा, यदि कोई मैसेडोनियन मेरे साथ आए और आपको तैयार न पाए, तो हम, आपकी तो बात ही छोड़िए, इस भरोसे से शर्मिंदा होंगे।

जैसा कि पद 1 में है, पौलुस फिर से पक्षाघात का सहारा लेता है। वह आगे बढ़ जाता है। वह कुरिन्थियों को याद दिलाता है कि अपने वादे को पूरा करने में उनकी विफलता न केवल उसे बल्कि उन्हें भी अपमानित करेगी।

कोरिन्थियों की शर्म के बारे में कुछ न कहने का दावा करते हुए भी, वह फिर भी इसका संकेत देता है। आप देखिए, प्राचीन भूमध्यसागरीय क्षेत्र के सम्मानित शर्म समाज में, प्राचीन भूमध्यसागरीय क्षेत्र में, किसी के वचन को पूरा न करने का मतलब शर्मिंदगी होता था। इतना ही नहीं, बल्कि इससे दूसरों की नज़र में सम्मान की भी गंभीर हानि होती है।

आप देखिए, प्राचीन भूमध्यसागरीय समाज में, आपके शब्द को आपका बंट माना जाता है। आप वही कहते हैं जो आप चाहते हैं, और आप वही कहते हैं जो आप चाहते हैं। दुर्भाग्य से, आधुनिक पश्चिमी दुनिया के लोगों के विपरीत, तथाकथित रूप से, शर्म, अवमानना, अनादर, अपमान या सार्वजनिक अपमान का अनुभव मृत्यु से भी बदतर भाग्य था।

आधुनिक पश्चिम में, हम इसे बहुत ज़्यादा महत्व नहीं देते। लेकिन उस समाज में, पॉल के उस समाज में, शर्म, अवमानना, अनादर, अपमान या सार्वजनिक अपमान का अनुभव मौत से भी बदतर था। कुछ लोग मरना पसंद करेंगे।

वास्तव में, आधुनिक दिनों में, मेरा मतलब है, आपको याद होगा, हम एक विशेष राष्ट्र के बारे में बात करते हैं जो पदानुक्रम करने की बात करता है, शर्म का सामना करने के बजाय, वे अपनी जान ले लेते हैं। हमारे अपने समय में भी, वे शर्म, सम्मान और शर्म का सामना करने के बजाय खुद को मार डालना पसंद करेंगे। और पॉल इस बात से अवगत था।

इसलिए, पौलुस कहता है, मुझे बस इतना चाहिए कि आप इस बारे में कुछ करें। और उसने पद 5 में कहा, इसलिए, मैंने भाइयों से आग्रह करना ज़रूरी समझा कि वे आपके पास पहले से जाएँ और आपके पहले से वादा किए गए उदार उपहार की व्यवस्था करें ताकि वह एक उदार उपहार के रूप में तैयार हो और लालच से प्रभावित न हो। बहुत महत्वपूर्ण है।

फिर, पद 6 और 7 में, जैसे-जैसे पौलुस आगे बढ़ता है, वह उदारता के आशीर्वाद के बारे में बात करता है। वह पद 6 में कहता है, आइए पद 6 को पढ़ें, अब मैं यह कहता हूँ, जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा भी। प्रत्येक व्यक्ति को वैसा ही करना चाहिए जैसा उसने अपने दिल में प्रस्तावित किया है, न कि कुढ़कर या मजबूरी में, क्योंकि परमेश्वर खुशी से देने वाले को प्यार करता है।

यहाँ पौलुस की अपील है जो उसने कुरिन्थ की अपनी तीसरी यात्रा की तैयारी में की थी। पौलुस यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिनिधियों को पहले ही भेजने वाला था कि उसके पहुँचने तक संग्रह पूरा हो जाएगा। अपने पाठकों को प्रेरित करने की कोशिश करते हुए, पौलुस उस विषय पर विस्तार से बात करता है जिस पर उसने पद 5 में संक्षेप में चर्चा की थी। अब उसकी चिंता परियोजना को पूरा करने की ज़रूरत से हटकर इस बात पर आ जाती है कि कैसे देना वास्तव में आनंदपूर्ण उदारता का विषय बन सकता है।

आनंदपूर्ण उदारता। वह उदारता के लाभों को समझाकर कुरिन्थियों को उदारतापूर्वक देने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह ऐसा कैसे करता है? वह सबसे पहले देने वालों को परमेश्वर की समृद्धि के बारे में बात करता है।

वह एक कहावत के माध्यम से देने के लाभ को संक्षेप में बताता है। वह कहता है कि मुद्दा यह है: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत बोता है वह बहुत काटेगा भी। इसलिए, वह उदारता के बारे में बात करता है, और पॉल के दिमाग में, परोपकार की धार्मिक भाषा और प्रेरित के प्रति कोरिंथियन की वफादारी मंत्रालय के परीक्षण से जुड़ी हुई है।

तुममें से हर एक को अपने मन के अनुसार देना चाहिए, अनिच्छा से या मजबूरी में नहीं, क्योंकि परमेश्वर खुशी से देने वाले से प्यार करता है। इसलिए, पद 6 को देखते हुए, मेरा मतलब है नीचे, वह पद 7 में कहता है, एक बार जब आप दिल से देते हैं, तो हम इसे पूरा कर लेंगे, और मैं थोड़ा-थोड़ा करके वापस आऊंगा। पद 7 में, एक बार जब आप दिल से देते हैं; पद 8 में, वह कारण बताता है; पद 8 में, वह यहाँ कहता है, और परमेश्वर आप पर सभी अनुग्रहों को प्रचुर मात्रा में देने में सक्षम है।

इसलिए, हर चीज़ में हमेशा पर्याप्तता रखने का मतलब है कि आपके पास बहुतायत हो सकती है। इसलिए, परमेश्वर सभी देने का स्रोत है। आयत 9 से 11 में, पौलुस क्या कहता है? यहाँ हम जाते हैं, जैसा कि लिखा है: उसने बिखरा दिया, उसने गरीबों को दिया, और उसकी धार्मिकता हमेशा बनी रहती है।

बोनेवाले को बीज देगा, और भोजन के लिए रोटी तुम्हारे बीज को बोने के लिए देगी और बढ़ाएगी, और तुम्हारे धर्म की फसल को बढ़ाएगी। तुम हर तरह की उदारता के लिए हर चीज़ में

समृद्ध हो जाओगे, जो हमारे द्वारा परमेश्वर के लिए धन्यवाद उत्पन्न करती है। इस सेवा का मंत्रालय न केवल संतों की जरूरतों को पूरी तरह से पूरा कर रहा है, बल्कि यह परमेश्वर के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद के माध्यम से भी बह रहा है।

तो, चौथी बात यह है कि परमेश्वर देने वाले को समृद्ध करता है। फिर, श्लोक 12 में, देने से परमेश्वर की आराधना और धन्यवाद की भावना जागृत होती है। और श्लोक 13 से 15 में, देने से परमेश्वर का सम्मान होता है।

तो, हम आयत 6 से 15 तक क्या देखते हैं? आम तौर पर, यह देने के बारे में बात करता है: हमें दिल से देना चाहिए; नंबर एक, भगवान देने का स्रोत है; नंबर दो, देने से देने वाले को समृद्धि मिलती है; नंबर तीन, देने से भगवान की पूजा और धन्यवाद होता है; नंबर चार, और देने से भगवान को सम्मान मिलता है, नंबर पांच। तो, आइए इसे थोड़ा-थोड़ा करके देखें। आयत 6 में, पॉल तार्किक रूप से, सावधानी से, जानबूझकर, और बहुत ही सूक्ष्म तरीके से सुनते हुए, उदारता के लिए अपने उपदेश का निर्माण करने के लिए आगे बढ़ता है।

वह क्या कहता है? इसे देखो, उसने कहा, मुद्दा यह है। ग्रीक में इसका शाब्दिक अनुवाद है, अब यह, अब यह, या आप इसे दूसरे शब्दों में कहें और कहें, अच्छा, इसे याद रखो। यह हमें एक कृषि कहावत से जोड़ता है।

इसमें कहा गया है कि जो कम बोता है वह कम काटेगा भी, और जो भरपूर बोता है वह भरपूर काटेगा भी। मुझे हमारे घर में एक कहावत याद है, जिसमें कहा गया है कि जिस व्यक्ति के पास रतालू का ढेर है, वह रतालू का ढेर लगाता है और लोगों से कहता है कि उसने सौ ढेर लगाए हैं, वह कहता है कि जब वह एक ढेर जो सच्चा है, खा लेगा, तो वह निन्यानबे ढेर जो झूठे हैं, खा लेगा और उस समय कोई भी उसकी बात नहीं सुनेगा, क्योंकि उसने वही काटा जो उसने बोया था। यही बात है।

आप जो बोते हैं, वही काटते हैं, और वह इस कृषि रूपक का उपयोग करता है, और यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी छवि है जो यहूदी ज्ञान परंपरा और पॉल के समय की ग्रीको-रोमन संस्कृति दोनों में परिचित है। आप जानते हैं, शायद, और शायद, संभवतः, पॉल के मन में नीतिवचन 11, 24 से 25 थे।

मेरा मतलब है, यह एक बुद्धिमानी भरा सिद्धांत है जहाँ वह कहता है कि कुछ लोग खुलकर शोक मनाते हैं, फिर भी वे और अधिक अमीर बनते हैं। दूसरे लोग जो देना चाहिए उसे रोक लेते हैं और केवल एक बार ही कष्ट उठाते हैं। आप देखिए, एक उदार व्यक्ति समृद्ध होगा।

यही बात है। और जो पानी देगा, उसे पानी मिलेगा। पॉल इस कहावत का अपना संस्करण यह कहकर गढ़ता है, कि जितना संयम से काम लो, उतना ही संयम से काटोगे।

तो उदारता से, आप उदारता से फसल काटते हैं। और यह दिलचस्प है, वह उदारता के बारे में बात करता है। वहाँ शब्द का मतलब बस उदार उपहार है।

यूलोगियास -- और, आप जानते हैं, यह काफी दिलचस्प है। जब आप देने के लिए पॉल की शब्दावली को देखते हैं, तो यह अद्भुत है।

वह charis का उपयोग करता है, और यहाँ, वह eulogias शब्द का उपयोग करता है। आप जानते हैं, eulogias, यहीं से हमें eulogy शब्द मिलता है। Eulogy।

जैसा कि कुरिन्थियों की स्थिति में लागू होता है, कटनी युग के अंत तक प्रतीक्षा नहीं करती। हमारा देना उदार होना चाहिए। यह उदार उपहार है।

यह स्तुति है। वह अपने श्रोताओं को अपने वर्तमान हृदय और जीवन में आध्यात्मिक और संभवतः भौतिक आशीर्वाद व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। जो उदारता से बोता है वह आशीर्वाद के सिद्धांत पर बोता है, और इस आधार पर वह काटता है।

बहुत, बहुत महत्वपूर्ण और सार्थक। भगवान प्रसन्न होंगे, और भगवान, बल्कि, किसी की उदारता के अनुसार, पुरस्कृत करेंगे। आप जानते हैं, मैं इसे इस तरह से कहता हूँ।

जो कोई बोता है, वही काटता है। यीशु ने कहा, दो, और वह तुम्हें देगा, तुम्हें सौ गुना लौटाएगा। क्या आपने इस बारे में सोचा है? परमेश्वर की वफ़ादारी के संदर्भ में, उसने कहा, जो कुछ तुम देते हो, तुम उसे बढ़ाते हो।

क्या आपको एहसास है कि अगर आप शून्य देते हैं, तो भी परमेश्वर वफ़ादार रहेगा? वह आपके शून्य को सौ से गुणा कर देगा। बस नतीजा अलग होगा, क्योंकि परमेश्वर अपना काम करेगा। परमेश्वर अपना वचन निभाएगा।

आप जो देते हैं, वह आपको जवाब देता है। अगर आप शून्य देते हैं, तो मेरा मतलब है, वह इसका जवाब देगा। इसलिए, अगर आप कुछ नहीं देते हैं, तो आपका कुछ नहीं, बस और भी ज़्यादा कुछ नहीं बन जाएगा।

उदारता से दो। यही हमें बताया गया है। परमेश्वर खुशी-खुशी देने वाले से प्रेम करता है, और फिर हम देखते हैं कि मेरा मतलब है, इससे पहले कि पौलुस पद 8 से 15 में नीतिवचन के निहितार्थ को स्पष्ट करे, लेकिन ऐसा करने से पहले, वह कुरिन्थियों को देने के लिए तीन महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

सबसे पहले, देना एक व्यक्तिगत मामला है। आप इसे श्लोक 7 में देख सकते हैं। आप में से प्रत्येक को अपने मन के अनुसार देना चाहिए। दूसरा, देने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

इसका मतलब है कि इसे वैसा ही करना है जैसा किसी ने अपने दिल में ठाना है। आप अपना मन बना लें। यहाँ, किंग जेम्स वर्शन में उद्देश्य का इस्तेमाल किया गया है, और यह दिलचस्प है कि यहाँ यह शब्द सिर्फ़ नए नियम में पाया जाता है, जिसका मतलब है जानबूझकर चुनना।

जानबूझकर चुनना। किसी चीज़ के बारे में मन बनाना इसका मतलब है। इसलिए, देने के लिए जानबूझकर देने की ज़रूरत होती है।

जो उदारता से बोता है वह आशीर्वाद के सिद्धांत पर बोता है, और इस आधार पर, लूका अध्याय 6 की आयत 38 को याद रखें। इस मूल सिद्धांत के अनुरूप हम यहाँ आयत 7 में देखते हैं। इसलिए, आयत 7 में, हम ये तीन बातें सीखते हैं। नंबर एक, देना व्यक्तिगत है।

कोई कितना देता है, यह हर व्यक्ति का सवाल है। यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब हर व्यक्ति को खुद ही देना होगा। यह व्यक्तिगत है।

दूसरा, इसके लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। यानी, आपके पास एक उद्देश्य होना चाहिए। तीसरा नंबर कहता है कि परमेश्वर खुशी-खुशी देने वाले से प्यार करता है।

खुशी से देने वाला। हमें बिना किसी शिकायत के देना है। यह काफी दिलचस्प है।

जब पौलुस कहता है कि हमें किसी भी तरह से अनिच्छा से नहीं देना चाहिए, तो यहाँ पौलुस की शब्दावली व्यवस्थाविवरण अध्याय 15, पद 10 की प्रतिध्वनि है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 15 के पद 10 में, हम पढ़ते हैं कि यह कहता है, तुम उसे उदारता से दोगे, और जब तुम उसे दोगे तो तुम्हारा मन उदास नहीं होगा, क्योंकि इस बात के लिए तुम्हारा परमेश्वर यहीवा तुम्हारे सारे संसार और तुम्हारे सारे उपक्रमों में तुम्हें आशीष देगा। यही सिद्धांत है।

यह विश्राम वर्ष के बारे में बात कर रहा है, और यह गरीबों को देने के बारे में बात कर रहा है। पॉल कहते हैं, व्यवस्थाविवरण में, मूसा लिखते हैं, उन्होंने कहा, यदि आपके किसी शहर में, आपके देश में, जिसे आपका परमेश्वर यहीवा आपको दे रहा है, आपके साथ कोई गरीब आदमी हो, तो आप अपना दिल कठोर न करें, न ही अपने गरीब भाई से अपना हाथ बंद करें। और फिर यह आगे बढ़ता है, और श्लोक 10 की ओर ले जाता है, आप उसे उदारता से देना चाहिए, और आपका दिल कठोर नहीं होना चाहिए।

पॉल यहीं पर इशारा कर रहा है। हम अनिच्छा से नहीं देते। मेरा मतलब है, यहाँ शब्द का मतलब है कि हम दर्द के कारण नहीं देते।

वहाँ दर्द शब्द, लूपस, या लूपस, हम दर्द या दुःख के कारण नहीं देते हैं। तो, आप पॉल को वहीं बात करते हुए देखते हैं। और फिर, इसके विपरीत, आप जो देखते हैं वह यह है कि परमेश्वर एक प्रसन्नचित्त देने वाले से प्रेम करता है।

भगवान खुशी-खुशी देने वाले को प्यार करते हैं। यह शब्द महत्वपूर्ण है। आप देखिए, अंग्रेजी शब्द hilarious का मूल शब्द हंसमुख के अनुवाद वाले मूल शब्द से आया है।

यह ऐसा है, देखो, भगवान एक मज़ेदार देने वाले को प्यार करता है। तुम मज़ेदार देते हो। मज़ेदार देते हो।

परमेश्वर खुशी-खुशी देने वाले से प्रेम करता है। क्या अंग्रेजी शब्द महत्वपूर्ण है? और पौलुस ने आशीर्वाद के स्थान पर प्रेम, अगापाई का प्रयोग किया है।

आप देखिए, सेप्टुआजेंट में लिखा है कि परमेश्वर खुशी से देने वाले को आशीर्वाद देता है। लेकिन अब पॉल ने इसे बदल दिया है। वह कहता है कि परमेश्वर खुशी से देने वाले को प्यार करता है।

भगवान उदारता को महत्व देते हैं। और फिर, वह खुशी-खुशी देने वालों के प्रति अपना प्यार सकारात्मक रूप से निर्देशित करते हैं। सवाल यह है कि हम कैसे देते हैं? भगवान खुशी-खुशी देने वाले से प्यार करते हैं।

यहाँ हर्षित शब्द का शाब्दिक अर्थ है प्रफुल्लित होना। हम प्रफुल्लित होकर देते हैं। संक्षेप में, दान व्यक्तिगत रूप से, बिना दिखावे के, बिना दबाव के, बिना हेरफेर के किया जाना चाहिए, और इसे खुशी से किया जाना चाहिए।

दान को बाध्यता के बजाय दृढ़ विश्वास से दिया जाना चाहिए। बाध्यता के बजाय दृढ़ विश्वास से। अब, श्लोक 8 से 11।

आयत 8 से 11 में, परमेश्वर आप पर हर तरह का अनुग्रह प्रचुर मात्रा में करने में सक्षम है ताकि आपके पास हमेशा हर चीज में पर्याप्तता हो, और हर अच्छे काम के लिए आपके पास बहुतायत हो, जैसा कि लिखा है। फिर पौलुस ने जो लिखा है उसे उद्धृत किया। परमेश्वर सक्षम है।

वह संग्रह के व्यापक धार्मिक आधार का विस्तार करता है। पॉल अब संग्रह के व्यापक धार्मिक आधार का विस्तार करता है। श्लोक 8 और 9 पूर्ववर्ती उपदेश के पूरे हिस्से को उठाते हैं और अब श्लोक 6 बी पर पॉल की टिप्पणी शुरू होती है।

और, बेशक, वे सीधे 7c से जुड़ते हैं। यह देखना बहुत दिलचस्प है। उन्होंने कहा, भगवान देने को तैयार है।

परमेश्वर सभी अनुग्रहों को प्रचुर मात्रा में प्रदान करता है। जब आप इस अंश को देखते हैं, तो आप देखते हैं कि सभी अनुग्रहों के स्रोत के रूप में, परमेश्वर कुरिन्थियों की उदारता में उनका आधार और उदाहरण दोनों है। उनकी उदारता में, परमेश्वर आपके प्रति सभी अनुग्रहों को प्रचुर मात्रा में प्रदान करने में सक्षम है।

यही तो वह कहता है। सब कुछ अनुग्रह करने में सक्षम। यहाँ मुख्य शब्द, फिर से, अनुग्रह ही है।

अनुग्रह ही वह प्रेरक अवधारणा है जो पॉल के संग्रह के संपूर्ण उपचार का आधार है। आप देखिए, यह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों लाभों को समाहित करने के लिए पहुँचता है। उनका अनुग्रह का भरपूर होना शायद प्रतिदान के बारे में नहीं है, नहीं, बल्कि केवल फसल या आंतरिक पुरस्कार के बारे में है।

परमेश्वर के अनुग्रह के संदर्भ में कुरिन्थियों की उदारता का परिणाम यह है कि सभी चीजों में, हर समय, उनके पास वह सब होगा जिसकी उन्हें ज़रूरत है ताकि वे दूसरों की ज़रूरतें पूरी कर सकें। इसीलिए वह कहता है कि परमेश्वर आप पर सभी अनुग्रहों को भरपूर कर सकता है। पर्याप्तता।

परमेश्वर आपके लिए सब कुछ पर्याप्त कर सकता है ताकि आप हर अच्छे काम में बढ़ सकें। आप देखिए, पौलुस यहाँ सामान्य रूप से अच्छे कामों के बारे में नहीं सोच रहा है, बल्कि उदारतापूर्वक देने के निरंतर काम के बारे में सोच रहा है। सुनिए, खुशी से देने वालों, न केवल कम से काम चलाने की कृपा है, बल्कि दूसरों को देने के लिए उनके पास ईश्वरीय संसाधन भी हैं।

पौलुस वास्तव में कह रहा है कि परमेश्वर का अनुग्रह कुरिन्थियों की आध्यात्मिक और भौतिक रूप से सभी ज़रूरतों को पूरा करेगा ताकि वे दूसरों को आशीर्वाद देने में उदार बने रहें। परमेश्वर का अनुग्रह एक देने वाला अनुग्रह है। जैसा कि किसी ने कहा, उसने कहा, देने के लिए दो शब्द हैं।

देने के दो फायदे हैं। एक है देना और दूसरा है क्षमा करना। देना और क्षमा करना।

दोनों ने दिया है। ईसाई जीवन के दो अनुग्रह हैं देना और क्षमा करना। परमेश्वर का अनुग्रह देने वाला अनुग्रह है।

फिर पौलुस बुवाई के कृषि रूपक पर वापस जाता है जिसे उसने पहले ही पद 6 में पेश किया था ताकि एक पवित्रशास्त्रीय उद्धरण के साथ अपनी बात को स्पष्ट किया जा सके। जैसा कि लिखा गया है, यह भजन 112, पद 9 के उनके उद्धरण का परिचय देता है। जो लोग प्रभु की सेवा करते हैं, जो प्रभु की सेवा करते हैं वे अपना धन बिखेरते हैं जैसे किसान गरीबों को देकर बीज बिखेरता है। आप देखिए, भजन में उस व्यक्ति का वर्णन किया गया है जो प्रभु से डरता है, जो प्रभु में प्रसन्न होता है, समृद्ध होता है, अनुग्रहशील और दयालु और धर्मी होता है, न्यायी और स्थिर होता है, और गरीबों पर उपहारों की बरसात करता है।

ऐसे लोगों को सम्मान दिया जाता है और याद किया जाता है। उनकी धार्मिकता हमेशा बनी रहती है। मेरा मतलब है, पौलुस यहाँ भजन 112 का हवाला दे रहा है।

यहाँ, हमेशा के लिए बनी रहने वाली धार्मिकता सिर्फ परमेश्वर के वफ़ादार चरित्र की नहीं बल्कि मानव दाता की भी है। यहाँ धार्मिकता का मतलब परमेश्वर की धार्मिकता नहीं है, बल्कि मानव दाता की धार्मिकता है जो जारी रहती है। आप देखिए, यहाँ धार्मिकता का मतलब शायद कुरिन्थ के दाताओं के नैतिक चरित्र से है।

उनकी धार्मिकता उनकी उदारता में प्रकट या प्रमाणित होती है। यह उनकी उदारता का प्रमाण है। मेरा मतलब है, ईश्वर सभी अनुग्रहों का स्रोत है।

वह कुरिन्थियों की उदारता का आधार और उदाहरण दोनों है। फिर पौलुस अपना विश्वास व्यक्त करता है कि परमेश्वर कुरिन्थियों को अपना अनुग्रह प्रचुर मात्रा में प्रदान करेगा ताकि उनकी

संतुष्टि उन्हें स्वयं से ऊपर उठकर हर अच्छे काम को करने में सक्षम बनाए। परमेश्वर केवल संसाधनों की पूर्ति से परे दाताओं के प्रति अपना अनुग्रह प्रचुर मात्रा में प्रदान करता है।

पॉल ने जो सामान्य सिद्धांत उद्धृत किया है वह यह है कि जितना अधिक हम देते हैं, उतना ही अधिक हमें परमेश्वर से मिलता है। आप जानते हैं, जिस दुनिया में हम रहते हैं, वह ऐसी दुनिया है जहाँ आप जितना पा सकते हैं, उतना पा सकते हैं और जितना पा सकते हैं, उतना पा सकते हैं। आप जितना पा सकते हैं, उतना पाते हैं और जितना पा सकते हैं, उतना पा सकते हैं।

लेकिन पॉल कह रहा है, नहीं, ऐसा नहीं है। हम आशीर्वाद बनने के लिए धन्य हैं। यही पॉल का सिद्धांत है।

हम आशीर्वाद पाने के लिए धन्य हैं, न कि अपने लिए रखने के लिए और, नहीं, जितना मिल सके उतना पाने के लिए और जो मिले उसे नष्ट करने के लिए। नहीं, ईसाई जीवन ऐसा नहीं होना चाहिए। हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि पौलुस ने क्या नहीं कहा।

पॉल यह नहीं कहते या सुझाव नहीं देते कि धन या अतिरिक्त आय ईश्वर की स्वीकृति या आशीर्वाद का संकेत है, भले ही यह विचार पॉल के यहूदी समकालीनों में आम था। न ही यह देना है, जो पॉल की प्रशंसा करता है। यहाँ जो दांव पर लगा है वह उदारता की जीवनशैली, अनुग्रह की जीवनशैली है।

पौलुस इसी बात की प्रशंसा करता है। फिर हम वहाँ से आगे बढ़कर पद 12 से 15 पर जाते हैं, जहाँ पौलुस अपना धन्यवाद व्यक्त करता है। क्योंकि इस सेवकाई के द्वारा न केवल संतों की ज़रूरतें पूरी होती हैं, बल्कि परमेश्वर के प्रति बहुत अधिक धन्यवाद भी प्रकट होता है।

इस सेवकाई के परीक्षण के माध्यम से, आप मसीह के सुसमाचार के अंगीकार के प्रति अपनी आज्ञाकारिता और उनके साथ तथा अन्य सभी के साथ अपनी उदारता से साझा करने के द्वारा परमेश्वर की महिमा करते हैं। जबकि वे आपके लिए तरसते हैं और परमेश्वर के उस अप्रतिम अनुग्रह के कारण आपके लिए प्रार्थना करते हैं जो उसने आपको दिया है, तो परमेश्वर को उसके अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद। आप देखिए, पौलुस संतों की ज़रूरतों को पूरा करने से परे भेंट के लाभों को इंगित करके अपनी अपील समाप्त करता है।

निस्संदेह, पौलुस के मन में यरूशलेम चर्च द्वारा दिया जाने वाला धन्यवाद है जो परिणाम देगा। जब हम परमेश्वर के लोगों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं, तो यह धन्यवाद लाता है। दूसरा उद्देश्य, जो परमेश्वर के प्रति धन्यवाद की कई अभिव्यक्तियों में बहता हुआ उद्देश्य है, पौलुस का धार्मिक उद्देश्य है।

और दिलचस्प बात यह है कि वह इस सेवा की सेवकाई को इस सेवा की सेवकाई कहता है। मेरा मतलब है, याद कीजिए हमने कुछ क्षण पहले कहा था कि पॉल ने देने को लिटर्जिया कहा है, जिससे आपको लिटर्जी शब्द मिलता है। यही वह यहाँ कह रहा है।

यह सेवा जो आप करते हैं, देना, आराधना का एक कार्य है। यह सेवा का एक कार्य है। आप देखिए, पौलुस ने पहले ही भेंट के संबंध में सेवा मंत्रालय शब्द का इस्तेमाल किया है, डायकोनिया शब्द के साथ, जिसका अर्थ है मंत्रालय।

उन्होंने पहले ही अध्याय 8, श्लोक 4 में इसका इस्तेमाल किया है। लेकिन यहाँ, शब्द लिटर्जिया पॉल के पत्र में केवल यहाँ और फिलिप्पियों 2:17 और 30 में आता है। इसका अर्थ है सेवा, सेवा का अर्थ, कि देना हमारी सेवा का हिस्सा है। यह दिलचस्प है कि आप इस शब्द सेवा को विभिन्न तरीकों से ले सकते हैं, कम से कम तीन अर्थों में।

इसका अर्थ है समुदाय द्वारा की गई सार्वजनिक सेवा, या इसका अर्थ पुरोहिती या पवित्र सेवा हो सकता है। इसका अर्थ सामान्य अर्थ में सेवा हो सकता है। मंत्री, ग्रीक शब्द लिटर्जोस, मंत्री, हमारे अंग्रेजी समन्वय का स्रोत है, जिसे मैंने बार-बार दोहराया है, लिटर्जी।

तो, यह शब्द दो शब्दों का मिश्रण है: लोग काम करते हैं। नए नियम में, जो लोग ऐसी सेवा करते हैं, वे सिर्फ सिविल सेवक नहीं हैं, बल्कि वे काफ़ी प्रतिष्ठित नेता हैं। इसमें सेवा के बारे में बात की गई है।

पद 13 से 14, पद 13 से 14. यहाँ, हम 13 से 14 पढ़ते हैं; इस सेवकाई द्वारा दिए गए प्रमाण के कारण, वे मसीह के सुसमाचार के आपके संग्रह के प्रति आपकी आज्ञाकारिता और उनके लिए और सभी के लिए आपके योगदान की उदारता के लिए परमेश्वर की महिमा करेंगे, जबकि वे भी आपकी ओर से प्रार्थना करके, आप में परमेश्वर के अत्यन्त अनुग्रह के कारण आपके लिए तरसते हैं। मेरा मतलब है, पौलुस यहाँ पद 13 से 14 में कई भारी शब्दों का उपयोग करता है।

वह शब्द देना, ईमानदारी, संगति और अनुग्रह का उपयोग करता है। यह उन दो आयतों में बहुत सारे शब्दों को एक साथ जोड़ता है। मेरा मतलब है, पौलुस ने आयत 13 में अपने केंद्रीय विचार को व्यक्त किया है।

वहाँ, लोगों के बारे में बात करते हुए परमेश्वर की महिमा होगी। तो, मेरा मतलब है, मेरा मतलब है, जब कोरिंथियन देखेंगे कि क्या दिया गया है तो वे परमेश्वर की महिमा करेंगे। उन्होंने कहा कि पहला सबूत आज्ञाकारिता है जो मसीह के सुसमाचार के कोरिंथियन के कबूलनामे के साथ है।

मेरा मतलब है, कोरिंथियन यरूशलेम चर्च की वजह से बहुत खुश होंगे, बल्कि कोरिंथियन ने जो किया है, उसकी वजह से बहुत खुश होंगे। संग्रह का पूरा होना दिखाएगा कि उन्होंने परीक्षा पास कर ली है, और यरूशलेम के ईसाइयों द्वारा स्वीकृति उन ईसाइयों को सुसमाचार के प्रसार के लिए परमेश्वर की महिमा करने के लिए प्रेरित करेगी। संग्रह की स्वीकृति उन सभी यहूदियों के साथ संगति का संकेत देगी जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया है।

पौलुस आगे कहता है कि अपनी प्रार्थनाओं में यरूशलेम के मसीही गैर-यहूदी मसीहियों के रूप में उनके लिए अपनी लालसा व्यक्त करेंगे। यह भाग परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के साथ समाप्त होता है। परमेश्वर को उसके अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद।

मेरा मतलब है, पॉल गैर-यहूदी मसीहियों और यरूशलेम के विश्वासियों के बीच आपसी मान्यता, आपसी पहचान और प्रेम के बारे में बात करता है। आप देखिए, वह यरूशलेम के मसीहियों से अपेक्षा करता है कि वे अपनी प्रार्थनाओं में कुरिन्थियों को याद रखें। जब वे ऐसा करेंगे, तो उनके दिल कुरिन्थियों के लिए तरस जाएंगे।

उनका दिल कुरिन्थियों के लिए दुखी होगा। वे उनके लिए प्रार्थना करेंगे। यहूदी संत जो चंदा प्राप्त करेंगे, वे अपने गैर-यहूदी दानदाताओं के लिए तरसेंगे।

अर्थात्, यह विश्वासियों, यहूदी और गैर-यहूदी ईसाइयों की एकजुटता को प्रदर्शित करेगा और चर्च के एकीकरण में योगदान देगा जहाँ वे खुद को एक के रूप में देखते हैं। जैसा कि हमने पहले कहा, रोमियों 15:26 से 27 में, पॉल संग्रह के बारे में अपनी समझ का एक और स्पष्टीकरण देता है। यह कुछ ऐसा था जिसे मैसेडोनिया और अखिया के चर्चों ने एक दूसरे के साथ और यरूशलेम में संतों के बीच गरीबों के साथ एकजुटता या एकजुटता के संकेत के रूप में योगदान दिया था।

इसलिए, उपहार को कोइनोनिया के रूप में संदर्भित करके, पॉल इस बात पर जोर देता है कि यह दान का कार्य नहीं है। बल्कि, यह शामिल कलीसियाओं की समानता की अभिव्यक्ति है, देने और लेने दोनों की। जो दे रहे हैं और जो ले रहे हैं।

यह एकजुटता की अभिव्यक्ति है। वे एक दूसरे से प्रार्थना करेंगे। और आप देखिए, पॉल को पूरा भरोसा था कि भेंट का सकारात्मक स्वागत होगा, क्योंकि, उन्होंने कहा, परमेश्वर की ओर से कुरिन्थियों को दी गई असाधारण कृपा के कारण।

हाँ, हम जानते हैं कि यरूशलेम से कुरिन्थ तक का रास्ता बहुत लंबा है। लेकिन पॉल को यकीन है कि प्रार्थना और मध्यस्थता से इस दूरी को पाटा जा सकता है और इसे कम किया जा सकता है। इन सबके बावजूद, पॉल अभी भी कुरिन्थियों को संग्रह पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता है।

पौलुस ने देने के बारे में पूरी बातचीत को कैसे समाप्त किया? वह चर्चा को धार्मिक और प्रार्थनापूर्ण उद्गार के साथ समाप्त करता है। परमेश्वर को उसके अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद। आप जानते हैं कि उसका क्या मतलब है? यही उसका तात्पर्य है।

आइए हम सब ईश्वर को धन्यवाद दें। यहाँ अनुग्रह के लिए विषयगत शब्द का एक और प्रयोग है। लेकिन ईश्वर के उपहार की प्रकृति क्या है, जो डोरियन है? क्या यह संग्रह में सक्रिय ईश्वर का अनुग्रह है, जैसा कि संदर्भ से पता चलता है? क्या यह ईश्वर का संपूर्ण मुक्ति कार्य है? या क्या यह केवल ईश्वर का अपने बेटे के रूप में खुद को उपहार है? हाँ, उत्तरार्द्ध संभवतः और निश्चित रूप से संभव है।

उपहार, परमेश्वर का अपने बेटे के रूप में खुद को उपहार। परमेश्वर को उसके अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद। आप जानते हैं, अवर्णनीय विशेषण केवल नए नियम में ही पाया जाता है, जिसका निश्चित रूप से तात्पर्य है कि परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए जो किया है, वह उसकी लंबी अपील के लिए सर्वोच्च प्रेरणा है, कुरिन्थियों के लिए पौलुस की लंबी अपील के लिए।

पॉल का जो भी मतलब था, हम जानते हैं कि पॉल की जोशीली बयानबाजी से कुरिन्थ के लोग कार्रवाई के लिए प्रेरित हुए। उनकी शानदार अपील सफल साबित हुई क्योंकि कुछ महीनों बाद, उन्होंने कुरिन्थ से लिखा। सुनिए उन्होंने कुरिन्थ से क्या लिखा।

रोमियों 15:26 में उसने कहा कि मकिदुनिया और अखया के लोग यरूशलेम के पवित्र लोगों के बीच गरीबों को दान देने में प्रसन्न थे। तो, क्या पौलुस सफल हुआ? बिलकुल, हाँ। चलिए इसे समाप्त करते हैं।

2 कुरिन्थियों 9:6 से 15 तक हम क्या सीखते हैं? तीन महत्वपूर्ण बातें हैं जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। पहली बात, हमें सही भावना, सही भावना, सही दृष्टिकोण के साथ देना चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जब हम सही दृष्टिकोण और सही भावना के साथ देते हैं, तो हम बोते हैं, और यह फसल सुनिश्चित करता है।

फिर से, नंबर दो, हम सीखते हैं कि ईश्वर दूसरों के साथ प्यार से साझा करने के लिए हमारे अंदर और बाहर जो कुछ भी चाहिए, उसे देने के लिए तैयार है। जितना अधिक हम साझा करते हैं, उतना ही अधिक ईश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है। अंत में, जो दिया जाता है वह केवल भौतिक ज़रूरतों को पूरा नहीं करता है।

यह उससे भी बढ़कर है। इसमें चारों ओर आशीर्वाद के साथ रोमांचकारी आध्यात्मिक निहितार्थ हो सकते हैं, और हम सभी एक साथ चिल्लाने में सक्षम हो सकते हैं, भगवान को उनके अवर्णनीय उपहार के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 10, 2 कुरिन्थियों 9, देने के बारे में अधिक है।